**दृश्य 5**

**रोशनी। सीता और राम वन में घूम रहे हैं। उनके रास्ते में एक सुनहरा फॉन दिखाई देता है।**

सीता: **(फुसफुसाते हुए और इशारा करते हुए)** राम, देखो वहाँ पर एक झींगा है, चलो इसे डराओ मत।

राम: **(फुसफुसाते हुए)** क्या सुंदर प्राणी है। इसने जंगल को जीवन से भर दिया।

**फॉन मंच से बाहर निकल कर भाग जाता है।**

सीता: राम, कृपया इसे मेरे पास वापस लाओ। मुझे इसकी सुंदरता पर एक और नजर डालनी चाहिए।

रमा: मेरी पत्नी के लिए कुछ भी।

**राम मंच से बाहर निकलते हैं और सीता खुशी-खुशी जंगल की सफाई करते हुए अपने परिवेश में घूमती हैं। रावण मंच पर प्रवेश करता है, लंगड़ाता है और एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में वेश धारण करता है।**

रावण: क्षमा करें मेरे प्रिय, मैं एक थका हुआ, बूढ़ा आदमी हूँ जो अपना रास्ता भटक गया है। क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?

सीता: हाँ, ज़रूर मैं आपकी मदद करूँगी।

रावण: मुझे नहीं लगता कि मैं ज्यादा आगे चल सकता हूं।

सीता: मेरे साथ कुछ देर आराम करो, और फिर मैं तुम्हें अपना रास्ता खोजने में मदद करूंगी। चिंता मत करो।

**सीता उसकी ओर चलती है, रावण अपना लबादा हटाता है, इसका इस्तेमाल सीता को पकड़ने के लिए करता है। वह चिल्लाती है और संघर्ष करती है क्योंकि रावण उसे ले जाता है। वह अपना एक कंगन नीचे फेंक देती है। दोनों स्टेज से बाहर निकलते हैं।**

**राम मंच पर दौड़ता है, फुफकारता और फुसफुसाता है।**

राम: सीता, तुम कहाँ हो? सीता? फॉन पेड़ों में गायब हो गया। **(राम नीचे देखता है और अपना कंगन देखता है)** यहाँ एक संघर्ष था। **(राम मायूस होकर जमीन की ओर देखते हैं)** सीता, तुम कहाँ हो? रुको, वह क्या है जो मुझे दूर से चमकता हुआ दिखाई दे रहा है?

**राम मंच से बाहर निकलते हैं और रोशनी करते हैं।**